

DPN 5536

Title: हरिभजनशा सफू / HARI BHAJANAYĀ SAPHŪ
(गीतगोविन्द) (GĪTĀGOVINDA)

Run. No. 6227

Cat. No.

Micro. No.

Subject हार्मोन / Hymn

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21.5 x 9

Folios 32

Lines (in a page) 6/7 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thya^ssaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Also contains the following :-
ਧਰਮਗ੍ਰੰਥ ਲੇਖ
ਦਿਵਾਨ ਧਰਮਗ੍ਰੰਥ ਲੇਖ etc

[illegible]

॥ मदावी न रुदा हा सय न लंका रुदा थ ॥ अ व शे न ग दान का
 ॥ नाम को द्वा दी ॥ न का शे ती गा व न ना का य दी म डी क व न सी
 ॥ का थ सा व समु द की षा व द मा ना का ऊँ व ग दान का ॥ म्मा ना
 ॥ व न क द स सी न ये ना ॥ का ऊँ व ग दान का ॥ अ व शे न ग दान का
 ॥ नाम को द्वा दी ॥ ~~का व ल ना म व ना ना मी दे न जी व~~
 पु ल व द बाल द ह ग म स को मा ल द व अ र्से न दु द्या द हो सी को द ल हो सी व
 हो जी की व न स को द वा न दु बाल त हो का ल क ल द द या नी ॥ अ र्से न दु द्या

ल द ह सी को द ल हो सी व हो जी की व न स द हो जा दा का हा ॥ न न ॥
 बा ल त हो की मा सी गु की की न ॥ उ त ल दु बा ल त हो ~~का व ल ना म व ना ना मी दे न जी व~~
 ली अ न य न या न ले दु बा ल त हो श्री र्से ग ना ग ला का ॥ अ का स दु बा ल
 त हो व द्या वी म हो ग्ग ल ॥ नी या ल द बा ल ~~का व ल ना म व ना ना मी दे न जी व~~ य सु य ती क सी वी सी
 ल ना थ हो मा गी ली जी ली नी ल क थ ~~का व ल ना म व ना ना मी दे न जी व~~ को न य वी दो य ती सु हा हो या
 ल व ती नी ते ये न ध ल म रु य त य ज्ञे को ॥

श्रीगते सा ये नमः॥ करुणे वीदुः॥ करुमुपम ते प्राढे सयने ते
 मलने नदी नदि लकृत दु की कलनेः॥ करुणे वीदं दीनमयी
 लकृतीसी यो तसीसीलव सरु पृ न नाया त काल कीद तीग
 कृतायु त दयी न मुच ता सा या यु करुणे वीदं॥ अ गृवल्ली
 पृटी कानु ला तो वी कु क समर्थ त कानु॥ कल त लकी या त ल
 तल या सा त दयी न मुच त्र सा या सा॥ करुणे वीदं करुमुपम ते॥ १॥
 वयसि गते क॥ काम वी जालु॥ कनी ले क॥ काल विने वी ते क॥
 पलि वा ल॥ गम ते त तो क॥ स सा ल॥ करुणे वीदं करुमुपम ते॥

॥३॥ कृटी ला मु दी त लं वी त क सा वा सा या म सु दु कं त र सा
 ॥ यस्य न यी व न यस्य ती को र्यं उ द नि मी तं व दु कृ तं लु
 य॥ करुणे वीदं॥ ॥ गे य जी ता ना म स ह सुं पे र्यं य जी य ती लु
 य म रुं सुं॥ ने यं स रुं न संग म नि त्ते दे यं दी यदि न रु
 ना य व वि तं॥ करुणे वीदं॥ ॥ क ग व गि ता कि चि धी ताः ग ग
 क ल क न क यि त्त॥ सकृ द पि क्य स्य मो ला लेः सम च जो
 त स्य क्य मो पि क लो ती न व जो॥ करुणे वीदं॥ ६ यु न ल यी रु

न नै यु न ल यी म ल हं पु न न यी क नी ५ ले स य न॥
ॐ ह स सा ले ष लु वी ता ल कृ य या पा दी सो ला ले॥ क रु
जे यी दं॥ १॥ यु न ल यि ला ओ पु न ल यि दी व सा यु न ल
मा स॥ यु न ल यी य वो॥ ग क्के त्या यु की ल ती का ल त द यी
न मु च ती मा या का ल॥ क रु जे वी दं॥ ७॥ क्का व न वी त उ या
क न स तो ता व नी क य ली बी ले ल ठ॥ य वा ष व ती क ल ने
ल दे ह वा तो यी कृ ती को पी न जे हो॥ क रु जे वी दं॥ ८॥

ना ली त न क ल ना की नी वे स दु द्यु न्या क लु मो दा वे स
ॐ थ दी वी का का लं म न सि वी वा लं वा ल वा ल॥ क रु जे वी दं
१०॥ अ गी ग ली तं य ली ठं मु दं द स न वी दी न ना त दु दं च
॥ ११॥ का ती गृ ही द्यु दं दं यी न मु च त्या सा यी द॥ क रु जे वी
दं॥ १२॥ वा ल ता व न की ला स त त ली न स्य व न ल ल नी ल कूः
वृ षे सा व वी ता म ग न य न मे व द्यु नी को पी न ले ज न॥ क रु जे वी दं॥

११। कस्य को हं कृत या या तः कामे रु न नी को मे ता त ॥ ॐ ती ॥
पलीला ब वी तं सा रं सर्वं त क्ता स्य पु वी ॥ ॐ लीला रु जे विंद ॥
मिथ्ये क य ठ वी व ली त का था यु न्या पु न्या वी व की त य था ना
हं न तु ना रं लो क त द वी की म र्थं कृ य ते सो क ॥ रु रु गे वी
द ॥ १२ ॥ ॐ श्री च दी स यु क ठी का स मा य तं ॥ ॥ गं ग

॥ रागा गे दा मा न व ॥ ७ ॥ य ल य पु था पि रु न ॥ धृ ठ वा न सी व दं वी ८ ॥ हि
त व हि नु व ति नु म रु दं ॥ क स व रु य क स व धृ त मि न स ति न
रु य रु ग दि स ह त ॥ १ ॥ र वी ति त ति वि यू न त त ॥ त व ति सु ति यू थ
य त ति व त न कि न ॥ व रु ग त थ ॥ क स व धृ त क धु व नू र्प ॥ रु य रु
ग ॥ २ ॥ व स ति द स न शि षः त ॥ व त ति ता व न र्मा ॥ ग सि ति क रं क क त व
त म र्मा ॥ क स व धृ त रु क रु य ॥ ३ ॥ त व क न क म त व ॥ त ष म रु त शि र्ज
द यि त ति त न कि सि यू त न रि र्ज ॥ **क स व धृ त न त ह नी नू र्प ॥ ४ ॥**

२०
 १५
 १०
 ५
 कृत्रयसि वि कुमना ॥ वत्रिमगुत वा मनय दन कनि प्ररुनि तन नया
 वनी ॥ क स वधूत वामन नृप ॥ १ ॥ कृत्रिय नृधि नमय रग द वत वया
 यै ॥ शुचयसि ययसि मि त रु व ता यै ॥ क स वधूत रुगु यति नृप ॥
 ॥ ३ ॥ वित न सिदि कुल न ॥ दि यति कम नित्यै ॥ दश मू ष म्नि मनि न
 म नित्यै ॥ क स वधूत न धू यति नृप ॥ ॥ वह सि वि यू स वि स द ॥ व स न रू
 ल दारै ॥ ह न यति विदि त मि त्रि त य म् नारै ॥ क स वधूत ह न रू त रू यै ॥ ४ ॥

॥ नि द सि रु रु वि ॥ न ह न ह गृ ति जा त ॥ स द य ह द य ड डि त य
 घा त ॥ क स वधूत वृ ध स निल ॥ २ ॥ शु कृ नि व ह नि ध न ॥ क नृ गी क न
 वा र ॥ ५ म कं तु मि व कि म यि क ला न ॥ क स वधूत क न कि स निल
 १० ॥ शि रु य द व क व ॥ नि द म् दि त म् द नै ॥ शु ध सृ ष द स द रू वः
 रू व ॥ ७ ॥ क स रु य क स वधूत द श वृ धि नृ यं ज य ज ग स ह ॥ व द अ
 न ध न ॥ रु ग नि व ह ॥ रु ज न मृ णी य त ॥ द य न्दा न य त ॥ व न रु

गङ्गद॥ सुतमप्यमनययनु॥ प्रियम॥ वसं तवा सति कस
 मात्रे॥ नव॥ यथे काम की की ता॥ विलीतमृगतृष्णान्मनस
 जमदकन्दयैरुल्लिखितं॥ वितातु नयैते॥ वलद्वार्थानार्थान्
 न समिदम्बै सहनति॥ ॥ वसन्तग॥ कृतीता॥ लनीत
 लनीत॥ वगलतायनिश्रीनत॥ कामलमलयमसिन्धु॥ मधुकल
 निकलकनैवि तकोकिल॥ कृति त कृत्त कृत्त॥ ॥

वीह नतीह नितीह सनसं वसं त॥ नृपति युवतीरुनन समसखि॥
 वीनहि रुनस्यदुनक॥ ॥ उन्मदमदनमभात्रयधिक॥ वधुरुनरु
 निरुत विलाप॥ १॥ अतिकुलसं कसमसमुहनि॥ नाकुलवक्त्रकलाप॥
 १२॥ मृगमदशेन रुत्रकस व शमद॥ नवदलमात्रतिमात्र॥ म्वरुनहदय
 विद्वानमनसिरु॥ नव॥ त्रिकिणुकजात्र॥ १३॥ मदनमद्विपत्तिकनकदध
 नुवि॥ कणत्रकुसमविका॥ १४॥ मिलितसिलीमूरव॥ पातप्रियदमन॥ कृत
 सनदु नवकास॥ १५॥ विजतीतल्लिखित रुगदवनशोकना॥ तनु

4

4

मधुनस्मिन्नाठिगया॥सिधित्रिकुत्तुनदकन॥२॥

धत्तसामिनिमित्तवित्राचनवृम्भन॥कावत्रित्तठत्रितक

धानरुमत्तसमलकत्रवत्रयावत्त॥मदनमकादति

भाव॥३॥किंशलस्यननिवसिया॥श्रीनेसायनमश्रीस

स्वयनमापागुवाचपूसादनारदपूसासरपुदरीकसुक

येनकंभीषमागदाजुतवृत्तीरुवीभीषमापयतानहव

समभागावर्तनमासा॥लालसुकावी॥धरने

श्रीगनेसायनम॥श्रीसरस्वतीनम॥प्रशाम्यसीलसावीष्म

अरलमदजलनिवहंभुरमकुलानेकोसवीतंकपोलंअवीमतफलकातु

कामेसंगनपतीवदे॥१॥सुकलीमप्रह्वीवीचासारपरमामुमार्कधाम

जातवापीनिवीतापुसकेचरनी०मवपद्रामुजाद्रामुधकारपहस

२॥हसुतेमालीकामुलीकामुविगचतीमुपदमासमसामुधिताम

कर्मस्वरीमुभावीनिवहेतामपरमस्वारीमुभावतीमुधकीपडा

मुसादामु॥२॥वहेदेवउमापतीमुसुराहृमु॥वहेजगताकरनी

वहेपांनकमुसुरामुगधरंमुवहेपलुनीमुपतीमु॥१॥वहेवर्जस

सरकंवहेनयनीवहेमुकरादपयीवहेभृगुजनाचयचवरधवदेसि

वसहर॥२॥गुरुवलागुरुवीधुगुरुदेवमाहेस्व॥१॥गुरुरेवपरु

मनुदे लोयो सास्त्रकी कनवु ह्या देवी ज्ञानी हुनहुन मोहता
रिले पाते गाय होये सास्त्र लेपाया रो गइ ॥ ३ ॥ मुल सुत्र
विश्वामित्रा नवक्य ननु भाषी तै ॥ यनवि ज्ञान मोचन सर्वज्ञ
तोहि जायते ॥ मुल सुत्र चौत बरिषी ले भगवा को दो मुल
स्वही : जस मनुदे लोयो सास्त्र जन्म जस मनु जे भुत भ
वि जे वर्तमान नवु रला ॥ ४ ॥ मुरख सी देउ पदे स्पे नहु सुता स
वि भरने नच ॥ धृषता संप्रयो ज्ञान पेदी तव वसी दती ॥ मुखा
जति लाई उपदे सदि न्या : कुवे होरा की असब लाई गहु तादी न्या सक

फेरा फाया का सतरसि तवी स्वा सगर न्या मनु ज्ञानी ज्ञान भ
या पनी दुष पा बला ॥ ५ ॥ गुनि भी सह सं प्रकु पंडी ते सह सं क
था ॥ कुली भी समिने तय कवी होना वसी दती ॥ जो मनुदे ले
गुनी जन को संगत गइ ज्ञानी जन को अती लिद कल कत स
गमित्ता रिगई तस्म नुदे लाई के ले पनी प्रापदी परदे न ॥ ६ ॥ उ
मता ना भुजे गा ना मध्य पा ना चंद ती नो ॥ विश्वारा जक ला
ना चकी स्वा सती गत युष ॥ वो लासे गस पस ग मुतुवा
स गी हाति स गस्त्र संग रा जा स गहे ती सी तवी स्वा स

योमनुदेकोचापुचाडेदोसिद्धः॥७॥वेरीनामसहवीस्वासये
नरुमीचती॥सबुभागेसंसुसुप्रेपतीतपतीबुद्धेतेनेजोमनु
देलेसुसुसीतवीसासगदःसोमनुदेलेरुषकानुपामाचधीकन
सुतदहवदेवीवस्वापदीनगाभयाजोहृद्धः॥८॥धनधीन्पाप्रयो
पेष्टविध्यासंग्रहनेषच॥महादेवावदारेषुत्पेत्तलज्ज्यासयभवे
त॥॥धनकामाउदाधेतिकीसीनागदीविद्यासीतालीयादीया
गदीलाउडाकुलाचारगदीलाजनमानुनु॥९॥नगरसद्रसि
मातातगृष्टिदिसीपिता॥येस्तारेतीमाताकोरेसंसा

रेदधीदुस्तरै॥गुरुसमानकावावापनहोइननःम
हातारिपनिहोइननःसंसारगरपारगराउन्पाभामावा
वृष्टकीभन्दागुरुवदाहन॥१०॥मातागंगासंमोतीर्थ
पितापुस्करमेवचरागुरुकेदारसमोतिर्नमातागंगा
पुनपुन॥महेतारिगंगाबरेकहिहोःपितापुस्करतीर्थवरोव
रिहोःगुरुकेदारतिर्थवरोवरिहोःमाहातारिजन्मजन्म
किगंगाजतिकेहो॥११॥विद्यारूपकरुपानाइये

मांरु पंतपसिनी॥ को कि लानी स्वररूपं नरी ॥ रूप
प्रति वृता॥ कुरुपि को रूपी को छातपसि को रूप भे मा कोई लि को
रूपस्वरः स्त्री को रूप प्रति वृताः ॥ १२ ॥ नच विद्या समो वस्तु नच व्याधी समे
रिपू॥ नचा पतो सम हस्तैः नच वक्षोपरे वली ॥ ॥ सं गतमा को रु
लो वीद्या हो : सनु मा को थलोरो ग हो : प्रिया रा मा को प्रिया रो र
होरि हो : वली या मा को वलि यो विद्या ता हो ॥ १३ ॥

20

15

10

5

0

कमलिषिगच अमित तत्कलिषिबुग्मूलता ॥ पलवातुनिम
 लनि ॥ ५ ॥ नाकिस्मिष्वानय ॥ यस्मिन्नायने ॥ वाबनय
 अदताल्य ॥ वाबनलिम्याताकधकवगिपीता ॥ ६ ॥ लोचनलि
 षी ॥ गुरुकासी वैकलिषि ॥ बुगवनथलि ॥ पलवातुनिद
 ल ॥ नि ॥ वलितातादानय ॥ ७ ॥ यस्मिन्नायने ॥ यस्मिन्नाय
 नयचदता ॥ यस्मिन्नायकीमाता ॥ यनुकाचनिपि

ता ॥ ८ ॥ मृदलीवी ॥ गुरु अर्जसुमनिलिषि
 ॥ ९ ॥ तुवाधक ॥ यनयतुनिदलनि ॥ १० ॥ स
 सवासुदानय ॥ ११ ॥ यस्मिन्नायने ॥ १२ ॥ यस्मिन्नाय
 दयचदता ॥ १३ ॥ यस्मिन्नायने ॥ १४ ॥ कउ
 लाबनिपिता ॥ १५ ॥ दसलुथनागगुवासिथलिषि ॥

CMS

5

10

15

20

25

30

ॐ नमो भगवते ॥ यत्र पातु निदलनि ॥ दसम्य तक ५
लावदानव ॥ ॥ जषुभ ना लायन ॥ कृष्ण लपचव
ता ॥ ॥ श्री कृष्ण की माता ॥ द व कीय ता वा ॥ द व लीषी ॥
गुरु वास लीषी ॥ कृष्ण मथना ॥ यत्र पातु निदलनि ॥ क
सङ्गलदानव ॥ ॥ नवभ ना नायन ॥ वषर यचवता

५ ॥ वषकी माता ॥ कंन्या बनि यिता ॥ कासी वत लिषी ६
जगन लीषी ॥ कृष्ण यष्टसुमे ॥ यत्र पातु निदलनी
गयाङ्गलदानव ॥ ॥ दसभ ना नायन कन कील
पचवता ॥ कन कि माता ॥ माठ जीयीता ॥ वन कलीषी
गुरु सद सरु नय ॥ कृष्ण सरु लायान चवता ॥

नादायूनालीगमायमास्यः कं यः यचसिदात ॥
 मु ५ हात ॥ त ग दं द व ल कू ॥ ६ र स म त्रा ध्रु मि
 स म त्रा ध्रु मि नाद त नी क न कि का न व ॥ सा ध म
 स ग्गु के व त द्वा द स वा ल्यै स स म ध्या ना स्य म यान
 व ॥ व न स्या त म द्वा ध्रु म त स्या त ॥ व ग म ध्या इ त व न
 र स म ध्रु मी त ध्रु मी त नी नि द त नी के नी ग द न व ॥

॥ ॐ तिग्नादसुध्रुवतात्रुसमाकं ॥ ॥
 न मा ग्गु ग व त वा ग्गु दे वा य ॥ वि सु प न ल क न व ॥ स व द्वा ध्रु मी वा त लं क
 ग त क म द्वा वि र्मा स व न त नि व द न ॥ ति पृ त द व मा ना स ॥ द्वा ना ॐ
 ग्गु क त त द स प व क्का मि ॥ आ मा त क स द्वा व त ॥ द्वा ध्रु मी र कः
 तु ग्गु वि द्वाः क द्वा य च ति वि क मः उ त र्मा क ग व न कः क द्वा व व
 क ना द न ॥ १ ॥ ना शो मु च त व त न कः ग क्क मु वा म म्म था ॥ उ द न
 य म ना क य ॥ द्वा ति पृ व तु न क तु ॥ २ ॥ वा म य ॥ ग्गु स ता वि ध्रु द क
 न म ध्रु स द न ॥ द्वा स र्मा वा सु द व य ॥ द द य व क ना द न ॥ ३ ॥

नौद।सव व्यापिनि वक्ष नै।वि द्याधनाथालर तं धनाक नाथालर तं कं न्या।भाश थीन
 न तं गति॥१७॥ अष्ट त थीलर तं पृत्तं।न रुम्य न रुतं र्क्षि यं।को थी प्रर देकाम॥विष्णो
 कं मम कृति॥१८॥ अष्ट त नै।मवी द नै॥नामात्रा त ल्प र्क्षे व तं तं स्य नि स क ता गै।मम
 स त्पे स त्र व दाम्प हं॥२०॥ अदि त्वा द्वा ति बी यु॥दं उ य नि म् स श्व ला य व ता य
 स्य अनि र्णं।व्याधी म्।वु व व रु थ ता ॐ ति श्री विष्णु यं रु त व रु स मा य
 २१॥॥श्रु क सं क २२७॥

प्रषःसिंहः
 धनःपुत्रैर्वन्द

कर्कःविष्णु
 मीनःउरु
 चन्द्रः

वृषःकैला
 मकरःदक्षिण
 चन्द्रः

मकरःसिंहः
 मकरःसिंहः

१३ सा जे व व गु ग १ न क तु वा न गु ला गु ला ॥
 अ म जे ह जे उ प १ न न द ध न सा ध न ॥ ती
 र ज्ञा म लि अ जे स्म १ को ल द धु न स त रु य ॥ म
 कृ पृ पृ सा मु शृ पृ १ धु म न ध न वि ना स ॥ म
 प्रा षा उ वि पृ प उ १ य न प ति पृ न गु त्वा ॥ ती
 म जे ह जे उ स्म ज १ सा म्म ज द्वा का न सि हि ॥ रि
 श म वि अ शृ पृ ज १ वि क न मु रु य व ॥ म

१४ पृ पृ सा मु प उ र १ वि क व म्मा ग म न ॥ रि
 षा उ वि पृ ग ज कृ १ जि व क न थ न ॥ रि
 जे ह जे उ पृ जे प्रा
 म ची अ जे उ र म १ मृ न क व कृ या त न ॥ म
 पृ सा मु शृ ज कृ ज्ञा १ सु दं ज न म न म म्म ॥ म
 उ वि पृ प जे प्रा पृ १ कृ स न जो थे सि हि ॥ रि

त ज् ज् रु रु मृ धा ॥ मन्त्रं समागमार्तिं
 जी क्ष भ पू क् जा ज् ॥ मनसा श्रिया यति ॥ म
 सा मु ध उ ना म ॥ क म्ये क षु षु गुखातिं
 वि पू रु न मृ धा प ॥ ज् लपकी ज न ला ॥ तिं
 ज् उ ष् ज् जा ज् उ ॥ उ न मु ल जा य रु य ॥ म
 १५ क्ष भ उ रु प् म द ॥ मृ त्पु मृ त्पु स द द ॥ म
 मु ध न क् धा प् वि ॥ का न ज् सृ त ॥ म

पू रु ज् ना ज् उ सा ॥ ति ही ता ग ग् त् सृ त् सृ त्
 उ पू रु म् म द वि ॥ गु ना ग् ग् त् दि रु य ॥ म
 १६ ज् उ क् जा प् वि ज् ॥ मु मु त् ज् मृ त् सृ त् सृ त्
 भ न ना प् उ सा ॥ सृ त् क न द् द् पि य ॥ तिं
 ध ज् मृ धा द द मु ॥ गी दा स वृ धा ॥ तिं
 रु रु जा ज् वि क् प ॥ मा तं ग क् क न द् द् पि य ॥ म
 प् क् प् म सा म् उ ॥ ज् य व न द् द् पि य ॥ म

उ श्रि ष्य यू वि सु १ वं न प त्र या य न ॥ ति
 न उ व उ अ व १ वृ ह मा न व न या प तं ॥ ति
 वृ ह मा १ ० ० ति आ न सा दि ब्रा ॥ मू वि स ति य ग
 ज स जं व व शु न वा न
 अ म अ ह अ उ न आ न न्द या ग ॥
 न शु डरु कृ यू पृ सा सि दि या ग ॥

ज स जं व व शु न आ दि य ना गि ॥
 उ अ ॥ अ मृ ॥ प्रा ग ॥ ना र ॥ शु र ॥ व न ॥ का न ॥ उ अ ॥
 व न ॥ का न ॥ उ अ ॥ अ मृ ॥ प्रा ग ॥ ना र ॥ शु र ॥ शु र ॥
 नार ॥ शु र ॥ व न ॥ का न ॥ उ अ ॥ अ मृ ॥ प्रा ग ॥ अ मृ ॥
 अ मृ ॥ प्रा ग ॥ ना र ॥ शु र ॥ व न ॥ का न ॥ उ अ ॥ व न ॥
 का न ॥ उ अ ॥ अ मृ ॥ प्रा ग ॥ ना र ॥ शु र ॥ व न ॥ ना र ॥
 शु र ॥ व न ॥ का न ॥ उ अ ॥ अ मृ ॥ प्रा ग ॥ ना र ॥ का न ॥
 प्रा ग ॥ ना र ॥ शु र ॥ व न ॥ का न ॥ उ अ ॥ अ मृ ॥ ना र ॥
 उ अ ॥ अ मृ ॥ प्रा ग ॥ ना र ॥ शु र ॥ व न ॥ का न ॥ उ अ ॥

१ नमः श्रीगणेशाय ॥ अस्मीती न कुरु द व क्रातः स वा वा हा स वा सत्व ॥
 २ त न नी न कुरु ॥ प्र न वा हा न म नू ष क्रातः ग क सत्व ॥ क हिका न कुरु ॥
 ३ अ जि कू ल वा हा ॥ वा क स क्रातः ॥ वा ग सत्व ॥ आ दि क्षा न कुरुः क पि सा वा हा
 ४ म नू क्रातः ॥ ना ग सत्व ॥ मृ ग सिल न कुरुः वा वा वा हाः द व क्रातः ना ग सत्व
 ५ आ न कुरुः वि वा हा म म नू क्रातः वि वा सत्व ॥ मृ धू व स न कुरुः य न सा ४
 ६ वा हा द व क्रातः र ति सत्व ॥ अ न कुरुः क न स वा हा न ॥ द व क्रातः वा ग सत्व
 ७ अ (शु ष न कुरु ॥ का ष वा हा ॥ वा क स क्रातः ॥ मृ क ति सत्व ॥ २ ॥ वा म य न कुरुः

८ म स वा हा वा क स क्रातः ॥ यू सत्व ॥ प र्व हा गु ची न कुरु ॥ जी ला वा हा न ॥
 ९ म नू क्रातः सिं ह सत्व ॥ ॥ उ रु हा गु ण न कुरु ॥ ॥ या वा वा हा न ॥
 १० म म नू ष क्रातः ॥ ग म सत्व ॥ ॥ ह स न कुरु ॥ ना ग वा हा न ॥ द व क्रातः ॥
 ११ म सि षा सत्व ॥ ॥ वी न कुरु ॥ ॥ आ स वा हा न ॥ वा क स क्रातः ॥ वा घ सत्व ॥
 १२ सा ति न कुरु या ॥ दु न वा हा न ॥ द व क्रातः ॥ म हि ष सत्व ॥ वि षा ष न कुरु ॥

विद्या प्रवा सितो मित्रः भाज्या मित्रा ह्येषु च ॥ आतुरे असंधी म २
धर मी न पं ॥ सुरदेस कामि न की द्या हो गळे कामी न खि हो
रोग कामि न प्रेष की दोः पर न कामि न धर्म हो ॥ १४ ॥ दुरा ची
ता विष विद्या मुर्जि तां मो र्ज नो वे षं ॥ विषं गोस्त्री द रि द्ये व व
स्ये तर नी की ष म् चै रौ द न दो द्य दे वि आ य को वि द्या प नी ना सह
२१ न प चा दो षी षा या को अ न् प नी वि ष ह न्दः इरी इ र्ज न ल ड
रा ज भा र्प नि वि ष ह न्द वृ धा ला र्ज त र नि वि ष ह न्द ॥ १५ ॥

शु ना भ्या से र्ज ता वि द्याः नी पे हा से र्ज ता ची ये ॥ कु वि र्ये न ह तं दे न २२
मृ त्ये दो षे हा ता न प ॥ ॥ शु भ्या ग त दो द्यो दे वि पू र्णा को वि द्या
प नि ना सह न्दः वृ ते शु स्त्री ज न हा द्या को ना सह न्दः शु जो ज्ये
वि ष ष ना षे त को ना सह न्दः मं र्ज ता नि या म या रा जा को ना ह
द ॥ १६ ॥ ये से पु त्र न की र्ज स्वः न सु र न च पं दि तं ॥ शु र्धं का ल
कु लं त स्ये न ह चं डै व सर वरीः ज स्को दो रा ज्ञा नि दे न सुरो दे र्ज न
पं दी तो दे न भ न्या तर को कु ल ग्यो धा रो वि ना च न्द्र मा को रा न्ज ज स्को दो
॥ १७ ॥ सु र रि दी प क् चं ड प्र भा मे र पि दी प क् ॥ चं लो क वि

पक धर्म सु पूत्र कु लदी पक ॥ ॥ रात्री का द्विप चंद्रम दिन को द्विप
सु ज्योः कुल को द्विप सु पुत्रः ऋभु वन को द्विप धर्म मलो ॥ १८ ॥
जनेता वपनेता वः यस्तुर्वी द्या प्रय दृती ॥ अन दा ता भयं
दा ता प चै ते मातर स्मृ ता ॥ ॥ वातु ससुरा गुरुः भो क मा या न दि न्य
भया मार भ्या गार न्याः इ पां च ज ना ला इ वा तु भ न्नु ॥ १९ ॥ गारु प नी रा
जप ती मित्र पती त ये व च ॥ पती मा ता स्व मा ता पं च ई त्ये मा तर स्मृ ता
गुरु को अस्त्रीः राजा स्त्री मित्र को मो हो ता रिः सा सुः आ क र ना मो हो ता रि

ई पा च जाना मो हो ता रि भ न्नु ॥ २० ॥ लाल य त्व च व र र्खी नि द सु व र
र्खी नि ता र ये त् ॥ सै प्र प्रे वो द स्ये वं चै पुत्र मित्र स मा च रे त् ॥ ॥
न त्या नि मनु भे ल्ये हो रा ला ईः पी च व र्ष सं म्म स्य दृ न्द ग रि रं च
नुः पी च व र्ष दे विः इ स व र्ष सं म्म रि शू ई दु रा ई मा रि कु ति रा हा मा
ला उ नुः स्व र व र्ष को हो रो हु त् ज्वा लः वातु हो स के मि त्र भा भ ना ग
दि रा हु नु खो न ई दै न ॥ २१ ॥ लाल य त् व र्ख को दो षाः तै ई वो गु रा ॥ ॥
तस्मात् पुत्रं च सि भं वः लये त् न तु लाल य त् ॥ ॥ के ता के ति ला
ई उ मा ल्या व नु ते वै गू ल पर दः के ता के ति

वह ते गू टा पदः तस थ ले जा न जने न द्वा वह ह ला र्दुद्व
 गदै रह नू ॥२२॥ ह चिर म्मा स मो स्या तां धृ जा या कि प्र यो जने
 नावु भौ येदि न स्या तां : प्र त्या यां कि प्र यो जने म् ॥ ॥ अ ए का पूर्व का
 मस्तु वा ह म् म्मा स पानि द्भ म्मा बु धि नै प्मा पानि पठ लाः पठ ह क
 मन् पानि द्भ न म्मा स पानि द्भ न म्मा बु धि म्मा पानि पठ नै
 ॥२३ पु न्ना स्त्री सु वि की चै सा स्त्रै नि यो जा सत तं बु धै ॥ नि ति नि नि बु धी
 संपन्नैः भवति प्र लु पु जि त ॥ ॥ ज्ञा नि ज न हे ह ले दो रा ह ह ला र्दुद्व क ची
 तं गारि व ह की दी व्या सा स्त्र मा ला उ नूः सा स्व जा न्मा ज्ञा नि ही न्दः

सवै का मा नु ह्म ॥ २४ ॥ प थ पु न्ना कि मा ल स्य म पठो भार वा ह का
 प थ ते पु जी तो रा जा पठ प थं दि नो दि ने ॥ ची न व श्रु वि ले दो रा ह ह ला
 ई रि क कु द्द न ह पु न्ना हो रा त नि म न्ना इ य व नूः पठ रा स का रा ज
 जि को मा ने ह्मः मा ने हो लाः न पू या दो को वो क्त्तु प ली पू र्ण भू
 क यी म स र्क मा तो पे प्रे षो ज न वि क वं न द्य रा ग मि गा च दी रं वी
 व जि ता ॥ ॥ ह रि प्र का र का ग रि वि द्या सि क र्म सि पा रि क न व्या प्रो
 यो ज न ह्मः चं रां ता मा ला इ मा नू ना य ले ठा रि गा ई वी का उ दि न दू द्नी
 गा ई को वि का उ ह्मः वि गृ वि नि मा णी स्त्र ला र्दु को मा न्द ह्मः

दधेनः पादनैकाद्वेत्तच ॥ शुक्लं च्यादि वसं कृत्वा नाना योनिकमसु
 मवेदितगर्भसक्याः एकश्लोकपदसक्याश्चाद्याश्लोकपदतुः उतिनस
 व्यापनीया प्रश्नो कपदुतिपनी सकीयेन भन्पादिनको प्रेकमुद्देरपु
 जातिसक्या को दानते ते गतुरः थोरैले थोरै हनद ॥ ३३ ॥ योजनाना
 सत्त्वोरागी वृजं न्यातिपिपिलिका ॥ शुभाद्वन वैनते यो पिपदमे कं नग
 ॥ ॥ दिनदिन शुभं दि तगारिहीया देधि कि मिना पतिहृष्टार लाय को
 सभूमि पूदद्वनः नहि द्या देधि ग रूद पंद्दी भया पनीः सकको सभूमि
 पूददेननः तस अरथ न्या नि जनले उद्यम गर्भ ॥ ३४ ॥ सनैर्था

सनैर्कीद्या सनैर्पर्वत माहृता ॥ सनैर्धर्म च काम च वा प्रो मय्य ह
 नैसने ॥ ॥ धन कमा उ र्विद्या पदुनः उ का लेवदुः धर्म गर्भः इ चार
 थो कवि हो गारि हं ह ॥ ३५ ॥ गुरु कषया विद्याः पूस्करे ता धनेन गा
 मथवा विद्या या विद्या चरुर्धेनपल भेते गुरु का सेनाले धन ले विद्या सी तसा
 तिकननेक लेवेति या प्रकारलेः विद्या पाई ह ॥ ३६ ॥ देकाद्वर प्रदा तां रया
 गुरु नामि मं यो ते ॥ खान यो नीस तं गतं चां ले पूर्णि जायेते ॥ ऐकाद्वर
 सि का उता पुनि गुरु भनि मादू गुरु क नदे ला ग र्वा सप वार कू कुर को
 जम लिपद्यो मंदाल को को वमो ज म हृ द ॥ ३७ ॥ पुस्तकं पुस्तकं
 प्रते प्रोधि तं ताची तं गुरु सं नि धी ॥ नमं तमभा मध जला गा

या को ह कुल पा म न त क न विद्या वं त ला इ दे व त म न म
४॥ ना वार्थि च भव द्वी धा या व त्पा रं न ग द्वा ति ॥ कु ति नै च ग तै पारैः
नै का या कि प्र यो ज न ॥ ॥ गुं गार वि द्या व रो वारि हु तः स मू द्ध पार न
तारिं ज्यै लु ग्ग को चा हा ग द्वा स मू द्ध पार भ या पा दि दुं ग को क्य का
म ॥ ४ मु ॥ गु रा स र्व त्र पु ज्यं त्यैः पि तृ वं स नि र्थ क ॥ वा सु दे व न
म स्यं तिः वा सु दे व त तै ज न ॥ ॥ त्रि भु व न मा गू न को पु जा ला ग
द द्वा वी रू द्वा रै भ क्तु ह दे न गु रा नु न लो ति न भु व न मा श्री कृ ष्ण
का वा वु व सु दे व को पू जा का

तत्र तत्र तत्र तत्र

तत्र तत्र तत्र तत्र